International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublicat ions.org/ journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

वर्तमान और अतीत के परिदृश्य में भारत और रूस के बदलते रिश्ते सामरिक, आर्थिक राजनयिक सहयोगिता के संदर्भ में।

मु0 जाबेद

शोधार्थी, विभाग–राजनीतिक विज्ञान एस0के0एम0 विश्वविद्यालय, दुमका

किसी भी देश की विदेश नीति इतिहास से गहरा संबंध रखती है। भारत की विदेश नीति भी इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित है। ऐतिहासिक विरासत के रूप में भारत की विदेश नीति उन अनेक तथ्यों को समेटे हुए है, जो कभी स्वतंत्रता आंदोलन से उपजे थे। शांतिपूर्ण सहः अस्तित्व व विश्व शांति का विचार वर्षो पूर्व उन प्राचीन चिंतन का परिणाम है, जिसे बुद्ध, महावीर और गाँधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश नीति में उपनिवेशवाद, सम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध महान राष्ट्रीय आंदोलन की उपज है।

वर्तमान में भारत दुनिया का सबसे लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला देश है। इसकी अर्थव्यवस्था विश्व की बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। तथा जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा बड़ा देश है। प्राचीन काल में भारत का समस्त विश्व से व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक संबंध रहे हैं। समय के साथ–साथ भारत के कई भागों में अनेकों अलग–अलग राजा रहे, भारत का स्वरूप भी बदलता रहा किन्तु वैश्विक तौर पर भारत के अन्य देशों के संबंध सदा बने रहें। सामरिक संबंधों की बात की जाए तो भारत की विशेषता यही रही है कि यह कभी भी आक्रमक नहीं रहा।

1947 में अपनी स्वतंत्रता के बाद से भारत ने अधिकांश देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाये रखा है। वैश्विक मंचों पर भारत सदा सक्रिय रहा है।

1990 के बाद सामरिक व आर्थिक तौर पर भारत ने अपनी शक्ति को बनाये रखा और विश्व शान्ति में यथासंभव योगदान करता रहा है। पाकिस्तान व चीन के साथ भारत के संबंध कुछ तनावपूर्ण अवश्य है किन्तु रूस के साथ सामरिक संबंधों के अलावा भारत का इजराइल और फ्रांस के साथ विस्तृत रक्षा संबंध है। भारत–रूस संबंध आजादी के समय से ही बहुत प्रगाढ़ रहे है, शीतयुद्ध के समय भारत और सोवियत संघ में मजबुत रणनीतिक, सैनिक, आर्थिक एवं राजनयिक संबंध रहे है। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी दोनों देशों के संबंध पूर्ववत बने रहे।

रूस और भारत के बीच होने वाले रक्षा सौदों के तहत दोनों देश फाइटर जेट विमान वाले हैं। इसके वावजूद भी भारत दूसरे देशों के साथ अपनी सुरक्षा संबंधी नीतियों का विस्तार कर रहा है, रूस, भारत को हथियार, परमाणु पनडुब्बी समेत दूसरे कई साजो समान की आपूर्ति करने वाला मुख्य देश बना रहेगा। इस संदर्भ में भारत और रूस के रिश्तों का मजबूत होना काफी मायने रखता है। दोनों ही देश आपसी संबंधों को और व्यापक बनाने में लगे है। लेकिन वर्तमान परिपेक्ष्य में अपनी–अपनी विदेश नीति को सफल बनाने हेतु

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublicat ions.org/ journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

रूस चीन के करीब तथा भारत अमेरिका के करीब आ गया है। दोनों ही देश इस बात को समझते है कि वैश्विक दुनिया में आपसी संबंधों की पुरानी निर्भरता नहीं चलेगी और आपसी संबंधों की नई संभावनाएँ जाग उठी है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में अमेरिका समर्थित शांति समझौता के संदर्भ में चरमपंथ का मुद्दा कुछ और ही मायने रखता है। शांति समझौते के कारण गुलवदीन हिकमतदार अफगानिस्तान की राजनीति के केन्द्र में आ गये है। सुरक्षा से जुड़े दूसरे सामरिक मुद्दे सीरिया की परिस्थितियों से जुड़े हुए है, भारत सीरिया में युद्ध नहीं शांति चाहता है और बातचीत के पक्ष में है।

21वीं शताब्दी में भारत–रूस संबध

ब्लादिमीर पुतिन के राष्ट्रपति बनने के बाद से रूस ने अपने पुराने तेवर दिखाने शुरू कर दिये। पुतिन ने आक्रमक विदेश नीति का प्रदर्शन करते हुए कई बार अमरीकी विदेश नीति को चुनौती दी। हाल के वर्षों में नाटो के विस्तार के नाम पर अमरीका पूर्वी यूरोप के देशों में तेजी से अपना प्रभाव वढ़ा रहा है। जिसे रूस अपनी सम्प्रभुता पर सीधे आक्रमण मानता है।

1 जून 2017 को हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतीन से मुलाकात की, दोनों देशों ने विभिन्न आपसी महत्व के महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर करते हुए एक संयुक्त वक्तव्य ''21वीं सदी का एक दृष्टिपत्र'' नाम से जारी किया। रूस एक बार फिर से भारत जैसे अपने अपने समय की कसौटी पर परखे हुए मित्र की तरफ आकृष्ट हुआ है, इस दौरान भारत रूस की अर्थव्यवस्थाओं में भी काफी सुधार हुआ है। जिसकी वजह से रूस अब रक्षा क्षेत्र के अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र में भी सहयोग का इच्छुक है। पेट्रोलियम और गैस के क्षेत्र में तो दोनों देशों के मध्य सहयोग काफी आगे बढ़ चुका है।

रूस हमेशा से संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यता के लिए भारतीय दावों का समर्थन करता आया है। रूसी राष्ट्रपति ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि सुरक्षा परिषद का विस्तार किया जाता है, तो भारत के दावे पर गंभीरता से विचार जरूरी है। रूस का मानना है कि भारत स्थायी सदस्यता का शक्तिशाली दावेदार है। रूस से समर्थन के बाद इस पद के लिए भारतीय दावा और भी अधिक पुख्ता हो गया है। क्योंकि संयुक्त राष्ट सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों में से तीन फ्रांस, ब्रिटेन और रूस भारत के दावे के साथ खड़े रहे है।

भारत और रूस ने अपने संबंधों की 70वीं वर्षगांठ मनाते हुए कहा है कि दोनों देशों के मध्य अटूट संबंधों का आधार प्रेम, सम्मान और दृढ़ विश्वास रहा है। उल्लेखनीय है कि पिछले दशक में भारत–रूस संबंध एक निराशाजनक दौर से गुजरा है। अतः नई सहशताब्दी में दोनों देशों को विश्व में मौजूद चुनौतियों और अवसरों को देखते हुए अपने संबंधों को एक नई दिशा देने की जरूरत है।

- ❖ दोनों देश रक्षा हार्डवेयर और प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा एव ंतेल तथा गैस जैसे क्षेत्रों में सहयोग कर रहे है।

- ❖ दोनों देश एक बहुध्रुवीय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और सुरक्षा अवसंरचना को बढ़ावा देना चाहते हैं।

- ❖ शीतयुद्ध के अंत से ही वैश्विक परिस्थितियों में एक नाटकीय परिवर्तन हुआ है, ऐसे में दोनों देशों को अपने साझा हितों को विघटनकारी प्रवृतियों से बचाने की आवश्यकता है।

- ❖ ज्ञातव्य है कि दोनों देशों के संबंध, वैश्विक भू–राजनीतिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तनों के वावजूद स्थिर बने हुए है।

शीतयुद्ध के बाद भारत–सोवियत राजनीतिक साझेदारी में परिवर्तन

- ❖ चीन के खतरे को देखते हुए ही दिल्ली और मास्को एक दूसरे के करीब आये।

- ❖ शीतयुद्ध के अंत के बाद रूस, चीन को अब अपनी सुरक्षा के लिए खतरा नहीं मानता है। रूस द्वारा चीन के साथ सीमा विवाद के निपटाने, आर्थिक, व्यापारिक संबंधों में विस्तार और रूसी हथियारों एंव रक्षा प्रौद्योगिकियों का चीन एक प्रमुख आयातक होने के कारण भारत एवं रूस के प्रति अलग–अलग दृष्टिकोण है।

चीन में बढ़ते विस्तार और परमाणु शस्त्रागार में गुणात्मक वृद्धि के कारण रूस अभी भी चीन के बारे में बहुत सावधान है। यही कारण है कि रूस परमाणु हथियारों में कटौती से हिचकिचाता रहा है। चीन द्वारा मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप में विकसित किए जा रहे चीनी मार्ग पर भी रूस को आपत्ति है, क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों का सामरिक महत्व है। रूस की चीन के साथ वर्तमान निकटता सामरिक संबंधों के कारण बनी हुई है।

भारत को रूस–चीन के नए और सकारात्मक संबंधों में एक साथ समायोजित करने की आवश्यकता है। हमें चीन का सामना करने और पाकिस्तान के खिलाफ समर्थन प्राप्त करने के लिए मास्को पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। हमारी तरह रूस भी एक बहुध्रुवीय विश्व का समर्थन करता है। लेकिन वह भी ऐसे विश्व की स्थापना नहीं चाहता जिसकी पैरवी चीन करें अतः हमें रूस के साथ दीर्घकालीन संबंधों के लिए एक व्यापक ढाँचा तैयार करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त यूरेशियन यूनियन के साथ प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (FTA) को आगे बढ़ाना चाहिए और एक सदस्य के रूप में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उन सब परिस्थितियों को देखते हुए पूर्वी यूरोप और मध्य एशिया में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका का रूस द्वारा समर्थन किया जा सकता है।

रूस अमरीका और पश्चिमी यूरोप के साथ हमें अपने संबंधों को मजबूत करना चाहिए यह हमारे हित में होगा कि इन तीनों भागीदारों का समन्वित समर्थन प्राप्त करें, ताकि परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह में चीन के विरोध को तय किया जा सके। तथा NSG में छूट प्राप्त की जा सके। एक अधिक संयुक्त और सुसंगत यूरोपीय संघ के रूप में फिर से जुड़ने का भारत द्वारा समर्थन किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भारत के लिए लाभकारी होगा। अगर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

भारत के USA, पश्चिमी यूरोप रूस के साथ संबंध मजबूत होते है तो यह भारत को विश्व भू–राजनीति में अहम भूमिका निभाने में मदद करेगा।

शीतयुद्ध के अंत से ही भारत ने रूस के साथ एक मजबूत दीर्घकालीन ऊर्जा भागेदारी स्थापित करने की कोशिश की है तथा इन दोनों को पहले से चल रहे रक्षा हार्डवेयर और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

रूस भारत का पुराना सहयोगी है और संकट के वक्त इसने खुलकर भारत का साथ दिया है।रक्षा क्षेत्र में आज भी रूस भारत का सबसे बड़ा सहयोगी है।_पेट्रोलियम क्षेत्र में दोनों देशों के बीच संबंधों की नई बुलंदियों को छू रहे है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और आर्थिक हितों को देखते हुए भारत का अमेरिका के प्रति झुकाव बढ़ रहा है जो भारत रूस के संबंधों में रोड़ा बन सकता है। रूस, चीन व भारत के साथ मिलकर अमेरिका के खिलाफ त्रिकोणीय राजनीतिक शक्ति बनाने को इच्छुक जिसपर भारत की प्रतिक्रिया ज्यादा उत्साहबर्द्धक नहीं है। दोनों देशों के बीच संबंध अब भावनात्मक न होकर व्यवहारिक ज्यादा है।

भारत और रूस के मध्य मैत्री एवं सहयोग का रिश्ता काफी समय पहले से है। दोनों जरूरत के समय हमेशा एक दूसरे के साथ खड़े रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत रूस के बीच संबंध मधुर रहे हैं एवं 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस के साथ भी भारत के साथ आपसी संबंध प्रगाढ़ बनाये रखा। रूस हमेशा से भारत को संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्य बनाने का पुरजोर समर्थन करता रहा है। वैश्विक आंतकवाद को खत्म करने में दोनों देशों के बीच नीतिगत साक्षेदारी एक महत्वपूर्ण कदम है तथा आंतकवाद के विरूद्ध युद्ध की शक्ति प्रदान करने के लिए दोनों देशों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर किये गये उपायों पर विचारों का आदान प्रदान किया गया है। इस क्षेत्र में सहयोग की व्यवहारिक विनिमय करने की दृष्टि से दोनों देश पक्ष निकट भविष्य में आतंकवाद की वित्त व्यवस्था को प्रतिबंधित करने पर तथा लक्ष्यपूर्ण विचार विमर्श करने पर सहमत हुए है।

रूस के साथ संबंध भारत की विदेश नीति का मुख्य स्तम्भ है, और रूस भारत का एक लम्बे अरसे से भागीदार रहा है तथा भारत ने रक्षा के क्षेत्र में रूस के साथ दीर्घकालीन एंव व्यापक सहयोग दिया है। भारत रूसी उद्योग के लिए वर्तमान में रूस की विदेश नीति का मूल्यांकन करने पर यह ज्ञात होता है कि रूस और चीन के मध्य सामरिक निकटता बढ़ रही है। अतः भारत को इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए रूस के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाना चाहिए।

पूरे विश्व में रूस उर्जा का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। तथा भारत तीसरा बड़ा उपभोक्ता है।

रूसी नीति के प्रतिकूल मूल्यांकन पूर्व और पश्चिम एशिया तथा यूरोप की पुरानी प्रतिद्वंदता से प्रेरित रहे है। वह प्राचीन होड़ एक बार फिर लौट आयी है। यह होड़ वक्त–वक्त पर

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublicat ions.org/ journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

उभरती रहती है। पिछले कुछ वर्षों में रूस ने सक्रिय विदेश नीति की राह अपनायी है और इसकी वजह से पश्चिम के साथ उसके रिश्ते असहज हुए है।

सीरिया और करीबी पूर्वी देशों में रूस की दमदार मौजूदगी को देखते हुए पश्चिमी देश चौकन्ने हो गये है उन्हें लगने लगा है कि एक लम्बे अन्तराल के बाद प्रतिद्वंदी बराबरी की हैसियत में आता दिख रहा है। इन स्थितियों में लोकतांत्रिक रूप से सही होने के सवाल के अलावा इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि ये दोनों पक्ष रणनीतिक प्रतिद्वंदियों के मुद्दे पर बँटे हुए है। यह सभी जानते हैं कि हाल के वर्षों में इनमें जो मतभेद सार्वजनिक रूप से सामने आये हैं वे आपस में दूर नहीं हो सकते हैं। एक ताकतवर देश के तौर पर जिसके अपने बड़े क्षेत्रीय हित हो, रूस से अपनी भूमिका निभाने की उम्मीद की जा सकती है। रूस के खिलाफ प्रचार होता रहा है और भारत को इसे लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। हमें रूस के साथ अपनी मजबूत दोस्ती को इन धारणाओं, खासकर मीडिया निर्मित दृष्टिकोण से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।

भारत रूस के बीच दोस्ती का यह सिलसिला आज 70 वर्ष बाद भी जारी है, भले वर्तमान अमेरिका और भारत के बीच नजदिकियाँ बढ़ी हो, लेकिन हकीहत यही है कि भारत का सच्चा दोस्त रूस ही है। इन वर्षों के अन्तराल में अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य बदल गये, कई देश गृहयुद्ध के आग में झुलस गये और कई देशों के बीच रिश्तों गिरावट आयी, लेकिन भारत रूस के रिश्तों में आज तक कोई खटास देखने को नहीं मिला है। भारत की हर मुश्किल में रूस हमेशा से ही साझेदार के रूप में खड़ा रहा और दुनिया की परवाह किये बिना रूस अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत के साथ अपनी गाढ़ी दोस्ती को निभाता रहा। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रूस ने 22 जून, 1962 को अपने 100वें वीटों का इस्तेमाल कर कश्मीर मुद्दे पर भारत का समर्थन किया था। दरअसल सुरक्षा परिषद में आयरलैण्ड ने कश्मीर मामले को लेकर भारत के खिलाफ एक प्रस्ताव पेश किया था जिसे अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, चीन (सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य) के अलावे आयरलैंड, चिली और वेनेजुएला ने समर्थन किया था। इस प्रस्ताव के पीछे भारत के खिलाफ पश्चिमी देशों की बड़ी साजिश थी। इसका मकसद कश्मीर को भारत से छीनकर पाकिस्तान को देने की योजना थी, लेकिन रूस ने उस वक्त भारत की दोस्ती निभायी और उस साजिश को नाकाम कर दिया। सुरक्षा परिषद में रूस ने भारत का खुलकर समर्थन किया और आयरिश प्रस्ताव के खिलाफ वीटो लगा दिया। रूस की मदद ने भारत के खिलाफ प्रस्ताव को पास होने नहीं दिया। इससे पहले साल 1961 में भी रूस ने 99वें वीटों का इस्तेमाल भी भारत के लिए किया था। इस बार रूस का वीटो गोवा मसले पर भारत के पक्ष में था।

इसके अलावा पहले भी रूस पाकिस्तान के खिलाफ और भारत के पक्ष में अपने वीटो का इस्तेमाल करता रहा है। रूस ने परमाणु और अंतरिक्ष कार्यक्रम से लेकर विकास के कार्यों में भी भारत का अक्सर साथ दिया है। भारत के औद्योगीकरण में रूस का अहम योगदान है। रूस की तकनीक और आर्थिक मदद ने भारत के विकास में बड़ी भूमिका निभाई। बोकारो, भिलाई और विशाखापतनम् स्थित कारखाने, भाखड़ा नांगल पनबिजली बाँध, दुर्गापुर स्टील संयंत्र, नेवेली में थर्मल पावर स्टेशन, कोरबा में विद्युत उपकरण, श्रषिकेश में

एन्टीबायोटिक्स प्लांट और हैदराबाद फार्मास्युटिकल प्लांट की स्थापना में रूस ने भारत की मदद की।

रूस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को सहायता प्रदान करते आया है जिसके लिए पश्चिमी गुट तैयार नहीं है। 1988–91 से सोवियत संघ परमाणु संचालित पनडुब्बी आई0एन0एस0 चक्र किराये पर और डिजाईन सहायता सहित ईमारत, ब्लॉकों बनाने में मदद की और एक सफल भारतीय परमाणु पनडुब्बी आई0एन0एस0 अरिहंत विकसित किया। रूस ने हाल में ही 5वीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान के लिए भारत के साथ एक अति उन्नत ईंजन सह विकसित करने के लिए पेशकश की है जिसे लेकर यू0एस0ए0 और अन्य पश्चिमी देशों को एक लम्बे समय से इनकार है।

भारत और रूस की विदेश नीतियों की दिशा में बढ़ता अन्तर चिन्ता का कारण बना हुआ है। रूस का चीन और पाकिस्तान की ओर बढ़ता हालिया रूझान भारत को दक्षिण एशिया में भी हाशिये की ओर ढकेल रहा है। रूस हमेशा से भारत के लिए रक्षा उपकरणों का प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता रहा है, परन्तु अब वह चीन और पाकिस्तान को हथियार मुहैया करा रहा है। एक बेहद जटिल तकनीक वाली लम्बी दूरी की वायु रक्षा मिसाईल एस0–400 ट्रायफ पाकिस्तान को मिलने संभवना भारत के लिए सामरिक अस्थिता बढ़ाने वाली साबित हो सकती है। भारत भी इस मिसाईल को लेने की कोशिश में है। लेकिन अगस्त 2017 में बनाये गये अमेरिकी कानूनी ''काउंटरिंग अमेरिकन एडवर्सरीज थ्रू सैक्संश एक्ट'' के चलते यह सौदा अधर में लटक गया है। इन कानून का असर दो अरब डॉलर वाले अकुला–क्लास पनडुब्बी सौदे के साथ–साथ रूसी फिग्रेट, हेलिकॉप्टरों और हाल में शुरू किये गये उपक्रमों पर भी पड़ सकता है।
सलमान हैदर (पूर्व विदेश सचिव; 26 मार्च, 2018) के शब्दों में।

''काफी मुश्किलों से हमने रूस का साथ अर्जित किया है। ऐसे में अपने हितों और क्षेत्रीय सुरक्षा व संतुलन में उसकी अहमित को देखते हुए हमें उसके साथ रिश्तों को मजबूती और गहराई देने की जरूरत है''।

सारी दुनिया रूस को भारत का सबसे बड़ा रक्षा सहयोगी के रूप में जानती है, लेकिन आज बदलते राष्ट्रीय हितों के स्वरूप में भारत को रूस से अलग सा कर दिया है जिसका बड़ा कारण भारत का महाशक्ति बनने के लिए अमेरिका की तरफ झुकाव है। अमेरिका का पाक से अलगाव भी रूस को चीन पाक की ओर आकर्षित कर रहा है। चूँकि पश्चिमी जगत पर अमेरिकी नेतृत्व का हावी होना भी रूस की सबसे बड़ी चिन्ता का कारण है। इसी संदर्भ में वह पश्चिमी जगत का सामना करने के लिए चीन के निकट आ रहा है। चीन पहले ही भारत के लिए एशिया में सबसे बड़ा खतरा है। ऐसे में यदि रूस चीन के साथ खड़ा हो जाता है तब अपने राष्ट्रीय हितों को बचाने के लिए भारत को गंभीर संकटों का सामना करना पड़ सकता है। तब विश्व में साम्यवादी विचारधारा को बढ़ने से रोकना भी नामुमकिन होगा भविष्य में जहर उगलता पाक व चीन–रूस तीनों की घातक जुगलबंदी

से बचने के लिए भारत को रूस के साथ अपने रिश्तों को नई धार देने के लिए प्रभावी नीति निर्माण की जरूरत है।

संदर्भ सूची

1. राजेन्द्र माथुर संचयन–1 मोहिनी माथुर पृष्ठ सं0 423, वाणी प्रकाशन, 21A, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2. आधुनिक एशिया का इतिहासडॉ0 धनपति पाण्डेय, पृ0 सं0–773, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोती लाल बरानसी दास, नई दिल्ली (2007)
3. महाशक्ति भारत वेद प्रताप वैदिक, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 (2005) 1 बी0 नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002
4. भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति हर्षवर्धन पंत, प्रभात प्रकाशन (2012) 4/19, आसफअली रोड, नई दिल्ली–110002
5. डॉ0 स्वर्ण सिंह 18 मई, 2018 दैनिक जागरण दैनिक हिन्दी अखबार सम्पादकीय पृष्ठ
6. विश्लेषण; भारत रूस रक्षा संबंध पावेल एकेनॉफ, पी0वी0सी0 रसियन सर्विस, 2018
7. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति राजीव वंशल, एस0बी0पी0डी0 प्रकाशन, (2015)
8. अर्न्राष्ट्रीय संबंध बी0एन0 खन्ना, विकास प्रब्लिशिंग हाउस प्राईवेट लिमिटेड (2014)
9. वर्ल्ड फोकस (हिन्दी) विदेश मामलों पर भारत केन्द्रित मासिक जर्नल (2018)
10. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध (1914–50)राधेश्याम चौरसिया, अटलांटिक पब्लिकेशन (2017)
11. भारत की विदेश नीति, चुनौती राजीव सीकरी, सेग पब्लि0प्रा0 लि0 और रणनीति (2017)
12. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध सपन विश्वास (लक्ष्मी पब्लि0 2009)
13. 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय पुष्पेश पंत एम0सी0 ग्रोहिल, 2017 संबंध
14. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध रमेश कुमार आर्या पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2010)